ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

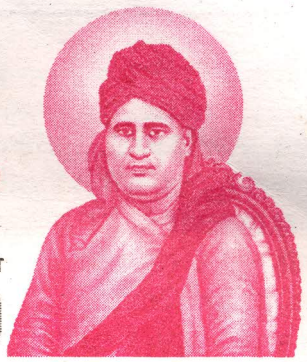

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

अग्निहोत्र करने का लाभ

"सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है। देखो जहां होम होता है, वहां से दूर देश में स्थित पुरूष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है, वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने ही से समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म हो के फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है। केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प और अतर आदि के घर में रखने से उस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु का प्रवेश करा सके, क्योंकि उस में भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि का ही सामर्थ्य है उस वायु को और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न–भिन्न और हल्का करके बाहर निकाल कर पवित्र वायु का प्रवेश कर देता है। हवन के मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जायें और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें, वेद पुस्तक के पठन–पाठन और रक्षा भी होवे। होम करने के बिना पाप होता है, क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर में जितना दुर्गन्ध उत्पन्न होके वायु और जल को बिगाड़ कर रोगोत्पाद का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त कराता है, उतना ही पाप मनुष्य को होता है। उसके निवारण के लिये प्रत्येक को अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिये।"

–सत्यार्थ प्रकाश

♦ उत्तर तो कहीं नहीं, यहाँ सवाल है, वहाँ सवाल है,
जिन्दगी है अथवा कबाड़ी का माल है,
चौरस्ते में खड़ा माली, कल बोल रहा था–
उपवन में फूल तो हैं पर खुशबू का अकाल है।

–इन्द्रजित देव

♦ शहीदों की कुर्बानियों पर जब गर्व करना आयेगा,
दयानन्द गांधी का भारत पुनः विश्व गुरू कहलायेगा।
भातृभाव में जुड़ने की कला, समझ में यदि अब नहीं आई,
तो सच मानों ऋषियों की भूमि, शमशान बन जाऐगी भाई।

–कृष्ण चन्द आर्य

यह अंक आर्य समाज मण्डी के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा
आगामी अंक आर्य समाज कुल्लू के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : १०७वां विक्रमी सम्वत् २०७३ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११७ जुलाई २०१६

कर रही तरंगे-तंग-तंग

♦देवनारायण भारद्वाज

पुरातन काल में कोई लोकप्रिय और चरित्रवान शासक थे। उनके सभी कर्मचारी व अधिकारी भी वैसे ही ईमानदार थे। वहाँ कोई घूस की धौंस नहीं चलती थी। समय–समय पर बिगड़े काम बनाने वाला, वहाँ एक योग्य कर्मचारी था। जब शासक के पास उसके सम्बन्ध में घूस लेने की शिकायतें आने लगीं, तब उन्होंने सोचा कि इस कर्मचारी को सेवा मुक्त भी न करना पड़े, और ऐसे काम पर लगा दिया जाये, जहाँ घूस लेने का कोई अवसर भी इसको न मिले। उन्होंने इसको समुद्र के किनारे समय काटने के लिए बैठा दिया। उसने कहा–मैं खाली बैठे–बैठे यहाँ क्या झक मारूंगा ? कुछ काम भी बताइए। शासक ने टालने के लिए कह दिया–अच्छा, तो तुम समुद्र की लहरें गिनते रहना। **यह तो उसके लिए शासक का आदेश हो गया। जब कोई जहाज वहाँ से गुजरने लगे, कर्मचारी उसको रोक दे; क्योंकि उसके लहरों के गिनने में बाधा पड़ रही थी, अन्ततोगत्वा जहाज को आने–जाने के लिए उसके मालिक को घूस का ही सहारा लेना पड़ता था। अब तो घूस का नाम ही लोगों ने बदल दिया है–सुविधा शुल्क।**

समुद्र लहरों को यहीं छोड़कर अब आकाश की तरंगों की चर्चा करते हैं। यही वह तरंगें हैं, जिनके माध्यम से कम्प्यूटर, टेलीविजन एवं मोबाइल आदि यन्त्रों के संजाल सक्रिय होते हैं। अब स्थिति यहाँ तक गंभीर हो गई है कि इन तरंगों से अश्लील अपराधपूर्ण, अनैतिक, अत्याचारी व अनहोनी घृणास्पद वार्तायें व दृश्यावलियाँ प्रसारित हो रही हैं, जिनके कारण उत्पन्न मानसिक प्रदूषण व्यावहारिक जीवन का सत्यानाश करता चला जा रहा है। बाल अपराध, वृद्ध अपराध, नारी अपराध, यौन अपराध, परिवार अपराध आदि अपराध बढ़ते जा रहे हैं। पुरातन काल में समुद्र को रोकने का प्रसंग कैसा भी हो, किन्तु आज इन तरंगों के माध्यम से चलने वाले उक्त विनाशकारी यंत्रों के संचालन को नियंत्रित करने की नितान्त आवश्यकता है जो चरित्रभ्रंश–विध्वंस के साधन बने हुए हैं और राष्ट्र में हा–हा कार मचा रहे हैं।

।। ओ३म् ।।

ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी चाहिए। जिससे सुख प्राप्त होगा ही, कष्ट आवेंगे ही नहीं।

–स्वामी दयानन्द

मुख्य संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

आर्य समाज के संस्थापक विश्व में वेदों का डंका बजाने वाला तथा वेदों के धुरंधर विद्वान ऋषिवर दयानन्द ने अपना समस्त जीवन परोपकार हेतु समर्पित किया। उन्होंने आर्य समाज के दस नियमों में आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य डालते हुए लिखा–संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक, समाजिक उन्नति करना। देश हित के लिए स्वामी जी महाराज ने अपने गुरूदेव दण्डी स्वामी विरजानन्द के प्रचार–प्रसार करने के लिए जगह–जगह ऊंची नीची घाटियों में विचरण किया और वेदों की अलख जगाई। वे मानव सेवा को ही ईश्वर सेवा समझते, जानते, मानते थे। स्वामी जी सत्यमित्र को ही सच्चाई हितैषी समझते थे। तुलसीदास जी ने मित्र के सम्बन्ध में बहुत सुन्दर कहा कि जो ना मित्र हित होए दुखारी ताहि विलोकन पातक भारी। अर्थात् जो मित्र की सुख–दुःख में कंधे से कंधा मिलाकर एक होकर प्रगतिपथ पर विचरण करता है समृद्धि सदा से ही वीर व गंभीर पुरूष को प्यार व सत्कार करती है। मानव का वही जीवन धन्य है मित्र की रक्षा करे उसके सुख–दुःख में वसन्त पतझड़ व धूप छाया में चट्टान की तरह खड़ा होकर उसका साथ दे। ऐसे महापुरूषों का जीवन स्तुत्य श्लाध्य व सराहनीय है वे मानव के ध्वल मस्तक पर एक महान आन व शान है। बल्कि रामायण में विभिषण को अपनी ओर देखकर सत्कार स्वरूप श्री राम ने आओ लंकेश कहकर पुकारा। विभिषण हैरान थे उन्होंने श्री राम के मुख से ही जानना चाहा कि लंका का राजा तो मेरा बड़ा भाई है फिर आपने मुझे लंकेश क्यों कहा ? श्री राम ने विभिषण के कंधे पर हाथ रखकर कहा कि अब उसके जीवन के थोड़े ही पल बाकी बचे हैं। हम उसे पाताल से भी लाकर मृत्यु का भोजन बना देगें। राम के बाणों से छिपना और बचना उसके लिए सर्वथा असम्भव है। विभिषण भी संयासी राम की शक्ति को जानता मानता व पहचानता था। उसने भी श्री राम के चरणों में रावण के समस्त रहस्य खोल दिए थे। इस प्रकार किसकिंधा के राजा सुग्रीव को भी समस्त राज्य संभालकर श्री राम ने अपने दायित्व का पालन किया अंग्रेजी में कहा है :–

A friend in need is a friend indeed

अर्थात् दोस्त वही है जो विपति के समय मित्र के ताप संताप व पाप के आगे चट्टान बनकर खड़ा हो और उनसे दो–दो हाथ करे मुझे अपने जीवन के एक छोटी सी घटना याद है। १९६० में मैं सरकारी खर्च पर बी.एड करने सोलन चला गया मेरे एक परम मित्र कृष्ण लाल जी ने अपने भाई डा. नीलमणि उपाध्यय जी को सब प्रकार से मेरी देख–रेख करने हेतू आग्रह किया ही नहीं अपितु उन्होंने कुछ धन, कुछ रुपये भी मुझे सहायतार्थ भेजे। मेरे लिए एक बड़ा दैवी सहयोग था।

उनके इस सहायता ने हम दोनों के प्रेम में और भी प्रगाढ़ता भर दी। मैं गत दिनों श्री चैतन्य देव जी से मिलने उनके घर पुरानी मण्डी में अपनी पत्नी श्रीमति महेन्द्री देवी और बेटी के साथ गये। उनके साथ मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। वह कहा करते थे कि मेरा सबसे अच्छा मित्र कृष्ण चन्द आर्य है। उन्होंने कहा कि तीनों भाइयों में कृष्ण लाल जी अत्यन्त बुद्धिमान, मिलनसार और सुखी जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति थे। वे कामयानी पुस्तक में श्रद्धा द्वारा कहे गए मनु के शब्दों का अक्षरशः पालन करते है सबको हंसता देखो मनु, हंसो व सुखपाओ अपने सुख को विस्तृत करके सबको सुखी बनाओ। वे अन्ध विश्वासों के और रूढ़ियों के सख्त विरोधी थे और शरीर त्याग से पूर्व उन्होंने अपनी पत्नी को कह दिया था कि मेरे मृत संस्कार पूर्व रूप से आर्य समाज के रीति व निति से किए जाए। परिवार वालों ने भी उनकी बातों का सहपालन किया। वियोग की इस घड़ी में मैं अपनी पत्नी श्रीमती महेन्द्री देवी के साथ उनके घर गया और सांत्वना दी। श्री कृष्ण लाल धीर–वीर व गम्भीर पुरुष थे। हमें उनके जीवन से सुखद प्रेरणा मिलती है। हमारा जीवन तभी धन्य है जब हम परोपकार के कामों को करे व ऋषिवर दयानन्द की शिक्षाओं पर आचरण करें। मुझे यह कहते अत्यन्त खेद होता है कि आज गुजरात में ही ऋषिवर दयानन्द के जाने माने व पहचानने वाले बहुत कम है। नित्य लोगों में उनका नाम रटने में जिहवा को विराम दे देते है। ऋषिवर दयानन्द तो युग पुरूष थे, जिन्होंने जीवन में अन्याय, अत्याचार व कुरितियों का खण्डन किया तथा मानवता का प्रचार व प्रसार किया।

वे मानव सेवक को ही सबसे बड़ा धर्म समझते थे। दूसरों के आंसू पोछनें में दयानन्द को सुख प्राप्त होता था। उनके शिष्य ऐसा मालूम होता है उनकी शिक्षाओं से अलग हो गए है, इस सम्बन्ध में बड़ी गहनता व गम्भीरता से विचार करके उन शिक्षाओं पर जीवन का परम तत्व समझकर चलने की आवश्यकता है। तभी और केवल तभी ऋषि दयानन्द व महात्मा गांधी का स्वप्न साकार हो सकता है।

–कृष्ण चन्द आर्य

शान्ति दूत ''श्री कृष्ण''

♦रोशन लाल बैहल, संचालक, आर्य वन्दना

वेदों के ज्ञाता महाभारत के महान योद्धा तथा पाण्डवों के सहायक योगेश्वर श्री कृष्ण का जीवन तपोमय था। शान्ति वार्ता का आखिरी प्रयास असफल होता देख श्री कृष्ण ने जोरदार शब्दों में महाभारत धृतराष्ट्र को पुत्रमोह से ऊपर उठकर चिन्तन करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि पाण्डवों को केवल मात्र पांच गांव दिए जाए ताकि वे सुख पूर्वक अपना जीवन यापन कर सकें और भारत वर्ष के शान्त भूमि अशान्त न होने पाए। हजारों लोग अकाल मृत्यु का शिकार न हो। मैं पाण्डवों की ओर से आपको विश्वास दिलाता हूं कि वे आपके इस प्रस्ताव को अस्वीकार नही करेंगे। पितामह भीष्म द्रोणाचार्य व कुलगुरू सभी ने महाराजा धृतराष्ट्र से जोरदार शब्दों में श्री कृष्ण द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव को स्वीकार करने की प्रार्थना की और कहा कि पुत्रमोह को त्यागकर अब वास्तविक निर्णय लेने का समय आ गया है। महाराज हजारों लोगों के नरसंहार को आप बचा लो अगर आपका हठी पुत्र योगेश्वर कृष्ण के प्रस्ताव को स्वीकार करता है तो हमें आज्ञा दिजिए कि हम आपके कुलघातक पुत्र को पशस्त करेंगे। ताकि देश से युद्ध की घटाओं के बादल दूर होकर शान्ति का सम्राज्य स्थापित हो जाए। लेकिन दुष्ट दुर्योधन कपटी शकुनी व करण को यह प्रस्ताव किसी भी हालत में स्वीकार नहीं हुआ। कर्ण तो केवल मात्र अर्जुन को मारना ही अपना अन्तिम उद्देश्य समझ बैठा था और शकुनि तो यह इच्छा थी कि किस प्रकार से दुर्योधन को युद्ध के चक्रव्यूह में बांधकर रखा जाए ताकि वह स्वतन्त्र प्रकार से कोई भी दूसरा चिन्तन कर सके। महाभारत के युद्ध के परिणामों का वर्णन करते हुए शय्या पर लेटे पिता भीष्म धर्मराज युधिष्ठिर तथा उसके भाइयों को कविवर दिनकर के शब्दों में बता रहे हैं। कही था जल रहा कोई किसी की गुरूता में कही था कोई लोभ में कोई किसी की क्रुरता में कहीं उत्कर्ष ही नृप का नृपों को शालता था कहीं प्रतिशोध का कोई भुजगंम पालता था। महाभारत के युद्ध में युद्ध से पहले महाराजा धृतराष्ट्र ने भी अपने हठी व दम्भी पुत्र को पांच गांव पाण्डवों को देने के प्रस्ताव को असमर्थ स्वीकार करते हुए कहा कि श्री कृष्ण कि एक बात सार गर्वित व अहंकार शून्य है उसने अपने बेटे से कहा कि युद्ध के बादलों को रोकने का केवल मात्र तुम्हारे हाथ में उपाय है दुर्योधन ने कड़कते हुए श्री कृष्ण को कहा, 'सुच्य अग्रे न दास्यामि बिना युद्धे न केशवः। अर्थात् मैं बिना युद्ध के पाण्डवों को सुई के नोक के बराबर भूमि नही दूंगा। पांच ग्रामों की बात तो छोड़ दीजिए। श्री कृष्ण समझ गए कि शकुनि, दुर्योधन व कर्ण की तिकड़ी शान्ति प्रस्ताव को हर हालत में पलीता लगाना चाहती है।

वे महाराजा धृतराष्ट्र को हाथ जोड़कर जब विदा होने लगे तो दुर्योधन, शकुनि व कर्ण की तिकड़ी ने उन्हें भोज में पधारने का प्रस्ताव रखा। श्री कृष्ण बोले दुर्योधन मैं तो तुम्हारे महलों में केवल दो ही परिस्थितियों में भोजन कर सकता हूँ या तुने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया हो तो अथवा तोरी आंखों में मेरे प्रति प्यार होता। दूसरी स्थिति में मुझ पर कोई विशेष विपत्ति होती।

अब हम अपने जीवन का निर्णय युद्ध क्षेत्र में ही करेगें। श्री कृष्ण के शान्ति प्रस्ताव को ही भंग होता देख योद्धाओं के दिल व दिमाग में चिन्ता सता गई अब युद्ध के घने बादलों को बरसने से कोई नहीं बचा सकता था। अतः वही हुआ जो होना था और जिसे श्री कृष्ण अपने विशेष आंखों से देख रहे थे। युद्ध के कारणों के वर्णनों का प्रकाश डालते हुए शैय्या पर लेटे भीष्म पितामह कह रहे है।

नहीं चाहता कोई लड़ना किसी से किसी को मारना अथवा स्वयं मरना किसी से नहीं शान्ति को नर तोड़ना चाहता है जहाँ तक हो सके निज शान्ति प्रेम निभाता है यह शांति प्रियता रोकती केवल को नहीं यह रोकपाती दुराचारी नर को दनुज क्या कभी शिष्ट मानव को पहचानती है विनय को निति कायर की सदा वह मानता है इस पुत्र मोह व अंधकार ने कौरव सम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया और सारी शक्ति पाण्डवों के हाथ में आ गई। युद्ध को बुलाकर और शान्ति प्रस्ताव को आग लगाकर जो कुछ दुर्योधन शकुनि व कर्ण की टीम ने किया वह सर्वदा त्याज्य है और इससे हमें शिक्षा लेनी चाहिए और अपने जीवन को प्रशस्त करते रहना चाहिए।

आर्य समाज कुल्लू का वार्षिक उत्सव

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज कुल्लू का वार्षिक उत्सव १७ जून से १६ जून २०१६ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। उत्सव में पूज्यपाद स्वामी सदानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) तथा श्री रामफल सिंह आर्य सुन्दरनगर ने अपने प्रवचनों से वेदामृत वर्षा की। श्री जसविन्दर आर्य, करनाल निवासी (हरियाणा) भजनोंपदेशक ने संगीत का मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर सभी धर्म प्रेमियों ने सपरिवार एवं ईष्ट मित्रों सहित पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर निःशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर (प्रतिदिन प्रातः १०.३० से १२.३० बजे दोपहर तक) पूज्यपाद आयुर्वेदाचार्य स्वामी सदानन्द जी द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण तथा रोगोपचार भी किया।

—अध्यक्ष, आर्य समाज, कुल्लू (हि.प्र.)

''आत्मिक उन्नति का साधन है योग''

♦डॉ बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्र लोक कालौनी, खुर्जा

योग आज विश्व की आवश्यकता बन गया है। अमेरिका, ईग्लैंड, जापान, फ्रांस, ईराक, अफ्रीका जैसे दुनियाँ के सभी देशों में वहाँ के स्त्री, पुरूष, वैज्ञानिक, चिकित्सक, छात्र व अधिकारी आज योग करते हैं व इसका महत्व भी समझते हैं। २१ जून को विश्व योग दिवस घोषित किया है।

भारत आध्यात्म के क्षेत्र में विश्व गुरू रहा है यही भारत का गौरव है। भारत विश्व में शान्ति की स्थापना करना चाहता है आर्य समाज का उद्देश्य ही धर्म का उद्देश्य है और वैदिक धर्म समस्त विश्व के लिए है लोक कल्याण हेतु है अर्थात् संसार का उपकार करना ही वैदिक धर्म का उद्देश्य है। शारीरिक आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना यही आर्य समाज का कार्य है। विश्व शान्ति परमाणु बमों से नहीं अपितु योग से हो सकती है।

विश्व शान्ति हेतु आज विश्व को योग ही नहीं अपितु वेदों की ओर लौटना होगा आज योग से जिस प्रकार विश्व में आध्यात्मिक चेतना जाग्रत हुई है उसी प्रकार वेद का ज्ञान प्राप्त करने से विश्व में जो भी उथल–पुथल हो रही है वह समाप्त हो स्थिति सामान्य हो जाएगी।

सर्व प्रथम तो सर्वत्र हथियार परमाणु अस्त्र–शस्त्र एक करने की स्पर्धा लगी हुई है। दूसरे प्रत्येक देश एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगे हुए हैं। तीसरे अनेक देश आतंकवाद को जन्म दे रहे है आंतकवाद से जन मानस चिन्ता ग्रस्त है भयभीत है चौथी बात सर्वत्र भौतिकवाद की ओर भागदौड़ हो रही है ऊंचे–ऊंचे फ्लैट, वातानुकूलित एसी निवास व गाड़ियों फाइव स्टार होटलों की चका चौंध ने आदमी को मानवता से हटा दिया है।

इसके साथ ही चारों ओर झूठ, अनाचार, अत्याचार, व्यभिचार, यौनाचार, चोरी, लूट, हत्या, कामुकता, अनैतिकता, दुराचार, बढ़कर मानवता की हत्या हो रही है बुराइयों में फंस कर मनुष्य की ओर बढ़ रहा है। यह सब पाप व बुराइयां वेद की शिक्षा व आचरण से समाप्त होंगे। योग का प्रकाश तो है ही साथ ही साथ हमें पुनः वेद की ओर चलना चाहिए।

योग से हम आत्मिक शान्ति प्राप्त करते है योगाभ्यास से स्वास्थ्य को दृढ़ करते हैं यह नियम आदि से बुराइयाँ को दूर करते हैं जिस प्रकार शरीर को जल से स्नान करा मैल को दूर करते है उसी प्रकार वेद ज्ञान से मन के मैल को दूर करते हैं जो योग द्वारा सम्भव है पापों का यह मैल योग से अवश्य दूर होगा।

आज परिवारों में असमंजस की स्थिति है जहाँ भाई–भाई से सास बहु से, माता–पिता से, पिता–पुत्र आदि से सामंजस्य नहीं कर पाते हैं फलस्वरूप परस्पर ईर्ष्या विरोध होकर लड़ाई झगड़े बढ़ रहे हैं धनाढय व निर्धन का भेद बढ़ रहा है मनुष्य को सम्बंधों से अधिक आवश्यकता धन की है प्रसाम के समाज की आवश्यकता है वह भौतिक चका चौंध की ओर भाग रहा है लाखों करोड़ों अरबों का धन कोठी नौकर चाकर वातनुकूलित गाड़ियां देश विदेश की यात्राऐं करना घोटाले ठगी करना लोगों का दिल दुखाकर विश्व में धनपति बन जाता है परन्तु फिर भी उसके मन में भय, क्लेश, चिन्ता घबराहट बनी रहती है अपनों में सम्मान नहीं रहता मृत्यु का भय सताता रहता एक दिन समस्त चल अचल अथाह सम्पति को छोड़कर चला जाता है कुछ नहीं ले जाता है सब कुछ यहीं रह जाता है। आत्मा की शान्ति भी हो जाती है फिर पारिवारिक जन भले ही उसकी आत्मा की शान्ति हेतु भगवान से प्रार्थना करें शान्ति नहीं मिलती क्योंकि जिस धन से उसका जीवन उलझन भरा रहा चिन्ता व भय युक्त रहा आत्मा शरीर छोड़ पुनः चिन्ता व भय वाले परिवार में ही जाएगी उसने चादर ही ऐसी ओढ़ ली जहाँ भय का वातावरण था जहाँ जन्म लेगा रोता चिल्लाता हुआ लेगा, भयभीत ही रहेगा कभी डरेगा कभी माँ की गोद में भय से उछलेगा भी यहाँ भी उसकी आत्मा भयभीत रहेगी।

अतः मनुष्य का जन्म है शान्ति से रहने का, भौतिक वाद से दूर रहने का, ईश्वर की गोद में रहने का, ईश्वर की उपासना करने का, वेद पढ़ने का वेद पढ़ाने का, आत्मा का बल बढ़ाने का, आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने का तभी तो शान्ति मिलेगी आत्मशान्ति जीवन की शान्ति हेतु, हमें वेद पढ़ना चाहिए योग करना चाहिए। तभी हम जीवन व मृत्यु का यथार्थ समझ सकते है जिसने वेद नहीं पढ़ा योग नहीं जाना योगाभ्यास नहीं किया वह जीवन के मूल्य को नहीं जान सकता वह समझा नर्म मैं पड़ा है जैसे कि व्यभिचारी, अनाचारी, हत्यारे, मानवता के शत्रु, झूठ चोरी आत्याचार अनाचार में पड़े है वह नर्क ही है। जो दुनियाँ का विनाश कर रहे हैं वह भी मानवता के शत्रु हैं इससे उन्हें शान्ति तो कभी भी नहीं मिल सकती चिन्ता भय उन्हें घेरे रहता है न कभी सुख मिल सकता। सुख का जो सत्यमार्ग है वह वेद है वेद से ही सर्वत्र शान्ति मिल सकती है योग करें व कराऐं। परिवार समाज राष्ट्र व विश्व का उत्थान यदि होगा तो योग से ही हो सकेगा योग को घर–घर प्रकाशित करें सर्वत्र करें।

भारत की नदियाँ

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

जल मानव की प्रमुख आवश्यकता है। परन्तु पुराने समय में इसका संग्रहण आसान न था। जल खेतों के लिये भी आवश्यक है। इसलिये मानव वस्तियाँ जल स्त्रोतों के निकट बसीं। संसार की सभी सभ्यताओं का विकास नदी घाटियों में हुआ। भारत में सिन्धु घाटी की सभ्यता एक उदाहरण है। इसके अवशेष महंजोदड़ा तथा हड़प्पा में मिले। इनके अतिरिक्त रोपड़ तथा अन्य स्थानों से भी अवशेष प्राप्त हुए। सार्वजनिक स्नानागार, सीधी सड़कों का निर्माण, नालियों योजना एक समान भवनों का निर्माण इत्यादि इस सभ्यता की विशेषतायें सामने आई हैं। कुछ इतिहासकारों ने इन्हें आर्यों की पूर्व शाखा माना है। आर्य भी सप्त सिन्धु की बात करते हैं। यह सात नदियों की घाटियाँ थी जहाँ आर्य बसे और उसे ही आर्यवर्त कहा गया। सप्त सिन्धु की सभी जल धारायें हिमालय से निकल कर इन घाटियों में बहती हैं। इन्हीं धाराओं ने इन घाटियों को जन्म दिया और यहाँ की भूमि को शस्य श्यामला बनाया। आदिकाल से ही यह नदियाँ मानव समाज के आदर की पात्र रहीं। वेदों में इन नदियों के नाम दिये हैं। गुज़रते समय के साथ इन नदियों के नामों में परिवर्तन आये। पौराणिक तो इन नदियों की आरती उतारते हैं। गंगा को मोक्षदायनी कहते हैं। इसीलिये इसमें अस्थि विसर्जन करते हैं। अस्थि विसर्जन के स्थान को हरि की पौड़ी और शहर का नाम हरिद्वार रखा है। इसका मैदान संसार का अति उपजाऊ मैदान है। इसकी घाटी घनी आबादी वाली है। यही नदी है जिसमें छोटे जल पोत चलते हैं। इस तरह यह यातायात को सुगम बनाने में सहायक है। महाभारत में इन नदियों का वर्णन आया है। गंगा, यमुना, रथस्थ, सरयू, गोमती, सरस्वति तथा गंडक। सरस्वति नदी लुप्त हो गई है। परन्तु इसके मार्ग का सैटालाईट द्वारा पता लगाया गया है। यदि उस मार्ग में कुआं खोदें तो जल अवश्य उपलब्ध होता है। वेदों में वर्णित नदियाँ इस प्रकार हैं। गंगा, यमुना, शतुद्रु (सतलुज), पुरूष्णी (रानी) असिवनी (चिनाव), वितस्ता (जेहलम), अर्जिकिया (व्यास), सुषोभ (सुवन) तथा मरूद्ध वृद्धा (मरूवर्धनी) यह बात उल्लेखनीय है कि वेदों में दक्षिण की नदियों का वर्णन नहीं है। परन्तु पुराणों में यह नाम मिलते हैं। प्रत्येक का वर्णन नीचे दिया जाता है। इनमें कुछ नदियाँ उतर भारत की भी हैं।

१. वेद स्मृति : गोमती और टांस नदियों के मध्य क्षेत्र में बहने वाली नदी।

२. नर्मदा : यह अमर कंटक से निकलती हैं और अरब सागर में गिरती है।

३. तापी : इसका वर्तमान नाम ताप्ती है। सूरत शहर इस के किनारे बसा है। अरब सागर में गिरती है।

४. प्योष्णी : यह मध्य प्रदेश में वर्धा नदी की एक शाखा है।

५. निविध्या : यह चम्बल नदी की शाखा है।

६. गोदावरी : यह नदी बड़ी पवित्र मानी जाती है। यह दक्षिण की ब्रह्म गंगा कहलाती है। यह ब्रह्म गिरी पर्वत से निकलती है।

७. भीम रथी : आज कल इसका नाम कृष्ण नदी है। कई इसे अभी भी भीमा नाम से पुकारते हैं। यह दक्षिण की सबसे से बड़ी नदी है।

८. ताम्रपर्णी : वर्तमान में यह ताम्रवरि नाम से जानी जाती है।

९. कृतमाला : इसके तट पर मथुरा स्थित है। वर्तमान नाम वैगा है।

१०. आर्य कुल्या : यह नदी लुप्त हो गई है। महेन्द्र पर्वत से निकलती थी।

११. ऋषि कुल्या : यह बिहार राज्य में स्थित है।

१२. कुमारी : वर्तमान नाम कर्ओहरि नदी है। यह माला पर्वत से निकलती है। बिहार राज्य में स्थित है।

चिनाव नदी का अन्य नाम चन्द्रभागा है। ये वास्तव में नदी की दो धारायें हैं, चन्द्रा और भागा। दोनों भिन्न दिशाओं से आती हैं। दोनों का उद्‌गम स्थान लाहुल है। फिर तांदी नाम के स्थान पर यह आपस में मिलती हैं। इससे आगे यह चिनाव कहलाती है। चिनाव की धाराओं से कई प्रेम कहानियाँ निकली हैं। चन्द्रा तथा भागा के बारे भी प्रसिद्ध है कि यह स्वर्ग का प्रेमी जोड़ा था जिसे स्वर्ग के नियमों का उल्लंघन करने पर नदी रूप में भिन्न–भिन्न स्थानों पर फैंक दिया। परन्तु दोनों फिर भी परस्पर मिल गये।

रावी नदी का अन्य नाम पुराणों के अनुसार ऐरावती है। इसी शब्द का अपभ्रंश रावी है। व्यास नदी का नाम पुराणों अनुसार विपाशा भी है। विश्वामित्र ने वशिष्ठ के १०० पुत्रों का वध इसलिये कर दिया क्योंकि वशिष्ठ उन्हें ब्रह्म ऋषि न कहकर राज ऋषि कहते थे। पुत्रों के वध से दुःखी होकर, वशिष्ठ ऋषि ने अपनी जीवन लीला समाप्त करने के लिए पाश से बंधकर नदी में छलांग लगा दी। परन्तु नदी की धारा ने वह पाश खोल दिया और ऋषि को किनारे लगा दिया। उसके पश्चात् नदी विपाशा कहलाई ब्यास नाम इसी शब्द का अपभ्रंश रूप है। परन्तु नदी की मुख्य धारा ब्यास ऋषि झील से निकलता है। झील के किनारे वेद ब्यास जी का मन्दिर भी है। कुछ विद्वान् नदी का नाम ब्यास इसी कारण पड़ा मानते हैं।

आओ पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का स्मृति दिवस ३, ४ व ५ अगस्त को मिलकर मनाएँ

♦आचार्य महाबीर सिंह, दयानन्द मठ, चम्बा

कर्म करते हुए जिन्होंने जां को निसार दिया
कल न कहे कोई कि हमने उन्हीं को विषार दिया
कर्म निष्काम का था जीवन में जिनके समाया
श्रीकृष्ण ने गीता में था जो बताया
न था कोई अपना न कोई था पराया
सभी के लिए प्यार हृदय में था समाया
आओ आज मिलकर उन्हें याद कर ले
नयन गगरियों को अपने अश्रवम्बू से भर ले।

प्रिय सज्जनों समय की धारा प्रबल वेग से बहती चली जा रही है। कब कितना समय गुजर गया किसी को पता भी नहीं चलता है। कल जो सुन्दर, स्वस्थ, सुडौल शरीर वाले लगते थे, काले घुंघराले बालों पर इतराते थे। मदमस्त, मतवाली चाल चला करते थे, आज ढीले ढाले चमड़ी वाले, झुकी कमर वाले वे ही शरीर झुर्रियों से व्याप्त है। बीमारियों के घर बन गए हैं। काले घुँघराले बालों के स्थान पर सफेद बालों ने व गंजेपन ने अधिकार जमा लिया है। जिस देह पर से नजरें नहीं हटा करती थीं, उसे आज कोई देखना भी नहीं चाहता। जो आज बदले रूप में नजर आते हैं, कल को वही नजरों से ओझल हो जाते हैं। यह काल क्रम है, समय का फेर है, सृष्टि का नियम है। महाभारत में आया

सर्वेक्षयान्ताः निचयाः पतनान्तासमुछ्याः
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तम् च जीवितम्

संग्रह का अन्त नाश है, उन्नति का अंत पतन है, संयोग का अंत वियोग है, जीवन का अंत मरण है। संसार में जो आए वो चले गए। जो हैं वे जाएंगें। इस सत्य को कोई मिटा नहीं सकता। पूज्य स्वामी जी भी अपने कार्य कलापों को करते हुए गतवर्ष यानि ५ अगस्त २०१५ को हमसे जुदा हो गए थे। साल बीतते पता भी नहीं चला। ५ अगस्त २०१६ को उन्हें गए हुए पूरा एक साल हो जाएगा। उन्होंने अपना सारा का सारा जीवन ऋषि के द्वारा बताए वैदिक पथ पर चलते हुए बिता दिया। वैदिक विचारधारा का प्रचार प्रसार करते हुए, आर्य समाज की बलिर्वेदी पर अपने आप को आहूत कर दिया। दुर्गम पर्वतीय प्रदेश में शिक्षा के माध्यम से, चिकित्सा के माध्यम से, शिविरों व कैम्पों के माध्यम से, बड़े–बड़े दीर्घ सत्रीय यज्ञों के माध्यम से, बड़े–बड़े अनुष्ठानों के माध्यम से उन्होंने वैदिक विचारधारा के परचम को लहराया। प्रशंसकों ने उनकी प्रशंसा भी की, उनके कार्यों की भूरि–भूरि सराहना की। निन्दकों ने निन्दा भी की, अपशब्दों का प्रयोग भी किया। उन पर कीचड़ भी उछाला। इन सब की परवाह किए बिना वे अपने कार्यों को करते रहे। अतीत में निन्दा, चुगली, अपशब्दों को न सहन करते हुए । अपना अलग रास्ता बनाकर चलने वाले विद्वानों, मनीषियों की तरह इन्होंने वैदिक पथ का परित्याग कर अपना अलग रास्ता नहीं बनाया। ऋषि के मिशन के लिए जीवन समर्पित किया था। उसी के प्रति सर्वदा समर्पित रहे। उसी के लिए कार्य करते–करते अंत में जीवन को उसी मिशन के लिए न्यौछावर कर चले गए। उनका स्मृतिस्थल, उनकी तपस्थली, उनकी कर्मस्थली दयानन्द मठ चम्बा आज उनके वियोग में मायूस है, उदास है। इस मायूसी को, इस उदासी को, पूज्य स्वामी जी के कार्यों को आगे बढ़ाकर आओ हम सब मिलकर दूर करें। जाने वाले तो अपने उस रूप में पुनः आते नहीं। सत्य युग में मान्धाता जैसे बड़े प्रतापी राजा हुए जो कि उस युग के अलंकार रूप थे, उस युग की शोभा थे, वे चले गए। अथाह समुद्र में जिसने पुल बांध दिया, दशानन का अंत करने वाला मर्यादा पुरूषोतम राम आज कहां है ? अन्य युधिष्ठिर, भरत, नहुष आदि प्रतापी राजा भी कहानियों के विषय बनकर रह गए। इतिहास के पन्नों पर अंकित होकर रह गए हैं।

संयोगाविप्रयोगान्ता जातानाम् प्राणिनाम् ध्रुवम्
वुद्धवुदाइवतोयेषुभवन्ति न भवन्ति च

संसार में उत्पन्न प्राणियों के संयोग का अंत जुदाई है अर्थात जो प्राणि पैदा हुए है, जिन प्राणियों का किसी न किसी रूप में आपस में संयोग हुआ है, मेल हुआ है, वे नष्ट होंगें। उनका वियोग होगा। उनकी जुदाई अवश्य होगी यह ध्रुव सत्य है। कैसे– जैसे जल में बुलबुले बनते है, आपस में मिलते हैं, और नष्ट हो जाते हैं वैसे ही संसार में हम सब का उत्पन्न होना, मिलना व बिछुड़ना होना होता है।

अतः पूज्य स्वामी जी ने तो इस उदासी को आकर दूर नहीं करना है। अब पूर्व के उत्तरजीवियों की तरह हम लोगों ने ही उस उदासी को दूर करना है। इसलिए पूज्य स्वामी जी की पुण्यतिथि को यज्ञ, सत्संग व ऋषि लंगर के द्वारा स्मृति दिवस के रूप में मनाने का कार्यक्रम बनाया है। ३, ४ व ५ अगस्त इन तीन दिनों में पूज्य स्वामी जी के कृतित्व व व्यक्तित्व पर चिंतन करेंगें, मनन करेंगें और अपने जीवन में भी श्रेष्ठ कर्मों को करने का संकल्प लेंगें।

युवैव धर्मशील स्याद् अनित्यम् खलुजीवितम्
कृते धर्मे भवेत् कीर्तिः इह प्रेत्य च वै सुखम्

जो लोग सोचते हैं अभी युवावस्था है । यह समय सांसारिक भोगों को भोगने का समय है, भोगों को भोग ले।

जब उत्तरावस्था आएगी, वृद्धावस्था आएगी, तब धर्म कर्म कर लेंगें। ईश्वर का भजन कर लेंगे। पर नहीं, जीवन का क्या भरोसा कब साथ छोड़ जाए। गीतकार की गीत पंक्तियां हैं :

श्वासों का क्या भरोसा आए या न आए
जो कर्म नित्य करता प्रभु न उसे भुलाए।

इसलिए युवावस्था में ही धर्म, कर्म कर लेने चाहिए। न जाने कब जीवन की सांझ हो जाए।

यह शमां गुजर न जाए कहीं हाथ मलते– मलते
कहीं बन्द न हो जाए यह श्वास चलते–चलते।

किसके जीवन की सांझ कब आ जाए किसी को पता नहीं। जाने को बच्चे भी चले जाते हैं। युवा को भी असामायिक मौत आ जाती है। चाहते हुए भी वृद्ध को मौत नहीं आती। हम सभी संसार रूपी बगीचे के फूल हैं। कौन फूल कब मुरझा कर गिर जाए यह उस माली को ही खबर है। अतः प्रिय बंधुओं आओ जब तक शरीर स्वस्थ है, जब तक श्वासों की लतिका चल रही है। चाहे हम बूढ़े हैं, जवान हैं, किशोर हैं जितना हो सके पुण्य कर्मों को कर लें, श्रेष्ठ कर्मों को कर लें। धर्मकर्मों को करने से मनुष्य की कीर्ति होती है, उसे यश प्राप्त होता है। इस लोक में भी सुख मिलता है और परलोक में भी अपार सुख प्राप्त होता है। प्रिय बंधुओ शास्त्रों में यज्ञ, सत्संग व दान का बहुत बड़ा महत्व बताया गया है, इन्हें श्रेष्ठ कर्म कहा गया है। आओ हम लोग इन पवित्र कर्मों को मिलकर करें। वेद भगवान भी कहते हैं– सहस्त्रं साकमर्चत अर्थात हजारों हजारों लोग मिलकर अर्चना करो, पुण्य कर्मों का सम्पादन करो महान फल प्राप्त होगा। और यह भी उस पवित्र आत्मा के स्मृति दिवस पर, जिनका जीवन ही यज्ञमय था, परोपकार का चलता फिरता रूप था। उस पुण्यात्मा, उस पवित्रात्मा, उस यज्ञपुरूष, उस तपोमूर्ति के स्मृति दिवस पर इनकी श्रेष्ठता को और बढ़ाए। इनकी पवित्रता को और पवित्र बनाएं। प्रिय बंधुओं उस दिव्यात्मा की इस स्मृति दिवस को आओ सब मिलकर भव्य रूप से मनाएं। इस अवसर पर प्रभूत रूप से अग्नि देव को घृत से अभिसिंचित कर यज्ञ करें। उत्तम प्रकार की हव्यों के द्वारा देवों को तृप्त करें। यज्ञ से उपजाऊ भूमि के समान बने हृदय भूमि पर भजनिकों, उपदेशकों के द्वारा दिए जा रहे सुविचारों के बीज को बीज लें, जिससे उस महापुरूष, उस युग प्रर्वतक के प्रति जहां हम अपनी कृतज्ञता व्यक्त करेंगें वहीं हमारा परम कल्याण भी होगा। यूं तो लोग अपने घरों में नित्य स्नान करते हैं, शरीर के मैल को धोते हैं, फिर भी अवसर प्राप्त होने पर तीर्थ स्थलों में भी डुबकी लगाने जाते हैं। मन की शांति के लिए जाते हैं, और वह शांति उन्हें वहां पर मिलती है, क्योंकि उन स्थानों पर कभी साधकों ने साधना की थी, तपस्वियों ने कठोर तप किए थे। याजकों ने बड़े–बड़े यज्ञों का अनुष्ठान वहां पर किया था, जिसके कारण वहां का वातावरण आज भी शान्ति का अभिसंचार करने वाला है। वहां का माहौल मनुष्य को कुछ क्षणों के लिए सांसारिक झमेलों को भुला देने वाला होता है। वह बात अलग है कि आज इस दिशा में उन स्थानों पर वह प्रयास नहीं हो रहे हैं, फिर भी पूर्वकाल का प्रभाव अब भी वहां अमिट है।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी।
सदियो रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।।

उन स्थानों पर आज भी पाप, पाखंड होने के बावजूद भी, झूठे व फरेबी लोगों के जमघट होने के बाद भी, वह प्रभाव बरकरार है। प्रिय बन्धुओं मैं मानता हूँ कि आप लोग अपने–अपने घरों में इन कर्मों को करते हो, और हमेशा करते रहो यह मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। इससे भरपूर सुख–सौभाग्य आप लोगों को प्राप्त होगा। पर साल छः महीने में जब भी उन महान तपस्वी की इस तपस्थली में इस प्रकार के आयोजन होते हैं, तो अवश्य भाग लेने का प्रयास करें, विशेष लाभ होगा। जब भी ज्ञान गंगा प्रवाहित होती है, डुबकी लगाने अवश्य आया करो, अंजाने में किए पाप धुल जाएंगे। भाव–विभोर होकर अग्नि में आहुतियां देते–देते परम शांति को प्राप्त करोगे, क्योंकि उस तपस्वी के तप के, उस कर्मयोगी के निष्काम कर्म के, उस यज्ञपुरूष के लम्बे व दीर्घसत्रीय यज्ञों के बीज–अणुओं व परमाणुओं के रूप में यहां व्याप्त हैं, यह भी तीर्थस्थली है। इन कार्यक्रमों मे आऐं ही आऐं। इससे इत्तर भी जब समय मिले यहां आऐं । यहां आप लोगों के रहने की उत्तम व्यवस्था है। खाने–पीने की व्यवस्था के लिए हमारा परिवार आप लोगों की सेवा के लिए उपस्थित है, और यज्ञ कर्म यहां का मुख्य आकर्षण है। वह निशदिन होता रहता है। पर्यटक पर्यटन के लिए इधर–उधर जाते रहते है। आर्य परिवारों के लोग पर्यटन के लिए भी यदि इधर आऐ तो मठ में ही ठहरें दोहरा लाभ मिलेगा। आम के आम गुठली के दाम, एक पन्थ दो काज हो जाएंगें। पर्यटन भी हो जाएगा, यज्ञादिकर्मों में शामिल होकर एक अनुपम शांति को भी प्राप्त कर लेंगें। ईश्वर सबका कल्याण करे।

करते हुए शुभ कर्मों को, मिलकर यज्ञ रचाऐंगे।
संसार को सारे न सही, इस भूभाग को स्वर्ग बनाऐंगे।।
तपस्थली उस तपस्वी की, कर्मस्थली भी है यह।
करना पूरा उन कार्यों को, छोड़ बीच में गए जो वह।।
स्वप्न था उस तपस्वी का, मठ को तीर्थ बनाना है।
पुण्यकर्मो का बीज बोजकर, सुख शान्ति के वृक्षों से सजाना है।।
आओ हम सब मिलकर उस स्वप्न को साकार करें।
पूत पवित्र सुरभि वाले इस नन्दन वन में विहार करें।।

पुरी में रहने वाले 'पुरुष' दो हैं

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रथम समुल्लास में लिखते हैं कि ईश्वर के अनेक नाम हैं। ये नाम गुणवाचक, सम्बन्धवाचक, कर्मवाचक हैं। इनके अतिरिक्त एक नाम मुख्य व निज (=ओ३म्) भी है। इसी समुल्लास में एक नाम 'पुरूष' भी है। इस नाम के आधार पर एक पौराणिक विद्वान पं. गिरिधर शर्मा ने एक शास्त्रार्थ में तत्कालीन आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान महात्मा मुंशीराम (=स्वामी श्रद्धानन्द जी) से प्रश्न किया था–स्वामी दयानन्द ने ईश्वर को पुरुष घोषित किया है। यह प्रमाण वेद में नहीं है तो स्वामी जी ने क्यों ऐसा घोषित किया ? इस प्रश्न के उत्तर में महात्मा मुंशीराम जी ने कहा कि वेद में ईश्वर को पुरुष कहा गया है :–

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्य वर्णं
तमसः परस्तात्
तमेवविदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था
विद्यतेऽयनाय–यजुर्वेद ३१–१८

अर्थात् मैं ऐसे महान्तम् पुरुष को जानताा हूँ जो आदित्य–सूर्य के समान तेजस्वी, अंधकार से परे है। वह ब्रह्माण्ड–रूपी नगरी में निवास करने वाले प्रभु पुरुष हैं, सर्वव्यापक हैं, सर्वाधिक महान् हैं, विभु हैं अथवा 'मह पूजायाम्' पूजा के योग्य हैं। उस ज्योतिर्मय प्रभु को जानकर ही मनुष्य मृत्यु को लांघ जाता है तथा मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। अन्य कोई उपाय या मार्ग नहीं है।

वेद के कुछ मंत्री में भी ईश्वर को पुरुष कहा गया है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं :–

सहस्राशीर्षा पुरुषः सहस्रक्ष सहस्रपात्। स भूमि
विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम।

ऋ.१०–६०–१

भावार्थ : वे पुरुष विशेष प्रभु 'अनन्त सिरों, आंखों व पांव वाले हैं। सारे ब्रह्माण्ड को आवृत करके इसको लांघकर रह रहे हैं।

पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यज्ज भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिसेहति।

–ऋ.१०–६०–२

भावार्थ : ब्रह्माण्ड नगर में निवास व शयन करने वाले प्रभु सब प्राणियों पर शासन करने वाले हैं। इनके जो कर्मानुसार जन्म को ग्रहण कर चुके हैं तथा जो समीप भविष्य में ही जन्म ग्रहण करेंगे इन प्राणियों के भी वे प्रभु ईश हैं।

एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।

–ऋ.१०–६०–३

भावार्थ : समस्त ब्रह्माण्ड पुरुष विशेष प्रभु की महिमा का प्रतिपादन कर रहा है। वे प्रभु इस ब्रह्माण्ड से बहुत बड़े हैं। यह ब्रह्माण्ड तो प्रभु के एक देश में ही है।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्युपुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।

–यजुर्वेद ३१/४

भावार्थ : यह पूर्वोक्त परमेश्वर कार्य जगत् से पृथक तीन अंश से प्रकाशित हुआ।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षव पुरुषं जातमग्रतः–यजुर्वेद ३१/१

भावार्थ : हम अपने ह्रदयों को पवित्र बना वहाँ प्रभु की ज्योति को जगाएं।

एतावनस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः।–यजुर्वेद ३१/३

भावार्थ : सारा ब्रह्माण्ड प्रभु के एक देश में है।

ततो विराडजायत विराजोऽअधि पुरुष।–यजुर्वेद ३१/५

भावार्थ : यह संसार प्रभु द्वारा प्रारम्भ में एक विराट् पिण्ड के रूप में उत्पन्न किया जाता है।

पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्।–ऋ. १०–६०–२

भावार्थ : यह जो कुछ भूत, वर्तमान और भविष्य है, यह सब उपलब्ध जगत् सब जगत् के आधार सनातन भगवान् में ही है।

वेदों में अन्य प्रमाण भी उपलब्ध है मस्तु विस्तारमय से वेद–प्रमाण और न देकर दर्शनों के कुछ प्रमाण उद्धृत हैं :–

क्लेशकर्माविपाकाशयैरपरामृष्ट पुरुष विशेष ईश्वरः।–योग दर्शनम् १/२४

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष तथा अभिनिवेश–उन पाँच क्लेशों, शुभा–शुभ कर्मों, कर्मफल तथा वासनाओं से असम्बन्ध पुरुष विशेष ईश्वर कहलाता है।

आत्मा को भी यत्र–तत्र पुरुष अर्थ में प्रयोग किया गया है :– उद्यानं ते पुरुष नावयानम्।–वेद

अर्थ : हे जीव! तुम ऊर्ध्वगतिवाले हो। तेरा नाम 'पुरुष है। तेरी सार्थकता पुरुषार्थ करने में है।

अर्थ : त्रिविधदुः खात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः।

–सांख्य दर्शन १/१

अर्थ : आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक–इन तीन प्रकार के दुःखों से अतिशय निवृत्ति परम पुरुषार्थ (=पुरुष का प्रयोजन) है। इसका प्रतिपादन करने वाले शास्त्र का प्रारम्भ करते हैं।

न सर्वोच्छित्तिरपुरुषार्थत्वादि दोषात्। सांख्य दर्शन ५/७४
अर्थ : आत्मा और अनात्मा सबका उच्छेद (=नाश) भी मोक्ष नहीं है, अपुरुषार्थता होने आदि दोष से।

पुरुषबहुत्वं व्यवस्थातः। सांख्य दर्शन ६/४५
अर्थ : पुरुष (=आत्माएं) बहुत हैं, व्यवस्था के कारण।

न पौरुषेयत्वं तत्कर्तुः पुरुषस्याभावात्।–सांख्य दर्शन ५/४६
अर्थ : शब्दराशि वेद भी पौरुषेय नहीं है (=किसी पुरुष अर्थात् आत्मा द्वारा रचे नहीं गए) उसकी रचना करने वाले पुरुष के न होने से।

ना पौरुषेयत्वान्नित्यवङ्कुरादिवत्। सांख्य दर्शन ५/४८
अर्थ : किसी पुरुष (=आत्मा) द्वारा न लिखे होने से वेदों का नित्य होना नहीं कहा जा सकता, अङ्कुरादि के समान।

यस्मिन्नदृष्टेऽपि कृत बुद्धिरुपजायते तत् पौरुषेयम्।–सांख्य दर्शन ५/५०
अर्थ : जिस वस्तु में कर्त्ता के द्वारा अदृष्ट होने पर भी यह रची गई है, ऐसी बुद्धि होती है, वह वस्तु पौरुषेय (=आत्मा द्वारा रची गई) कही जाती है।

सत्व पुरुषयोः शुद्धिसाम्ये कैवल्यम्।–योग दर्शनम् ३/५४
अर्थ : सत्व और पुरुष (=आत्मा, जीव की शुद्धि समान होने पर कैवल्य =मोक्ष) हो जाता है।

ब्राह्मणः पुरं वेदेति पुरुष उच्यते।–अथर्ववेद १०/२/३०
अथर्व की दुष्टि से "पुरं वेत्तीति पुरुषः" ऐसा पुरुष निर्वचन है। श्रुति की दृष्टि से यह निर्वचन जीव (=आत्मा) का ही प्रतीत होता है क्योंकि ब्रह्मपुर का ज्ञान वही करेगा। जहाँ ब्रह्म ओत प्रोत है, वह सब ही ब्रह्म का पुर हुआ तथा वह है सर्वजगत्, उसे सम्पूर्णतः प्रभु ही जानते हैं, इस दृष्टि से वे भी पुरुष कहे जा सकते हैं।

आत्मा को 'पुरुष' क्यों कहते हैं ? वह पूः अर्थात् शरीर में रहता है। अतः पुरिपादः कहाता हुआ पुरुष कहा जाने लगा अथवा उसमें सोता है। अतः प्ररिशय होता हुआ 'पुरुष' हो गया–पुरुषः पुरिषादः पुरिशयः।

पूरयति अन्तः अन्तर पुरुषम् अभिप्रेत्य
अर्थात् अन्दर से सम्पूर्ण जगत् को भरपूर कर रहा है, अन्तर्यामी होने से सर्वत्र व्याप्त है, ऐसा विग्रह परमेश्वर को लक्ष्य करके ही किया जाता है।

इससे सिद्ध होता है कि 'पुरुष' शब्द का अर्थ प्रसंग व परिस्थिवशात् आत्मा तथा परमात्मा–इन दोनों में से कोई भी अर्थ ग्रहण किया जाना चाहिए।

आत्मा रूपी 'पुरुष' और परमात्मा रूपी 'पुरुष' में अन्तर भी समझना अपेक्षित है। इस विषय में निवेदन यह है परमात्मा विशेष महान्तम् पुरुष है। यह यजुर्वेद के मन्त्र ३१/१८ में तथा योगदर्शन के सूत्र १/२४ में इस लेख में उद्धृत किया जा चुका है जबकि आत्मा सामान्य है। परमात्मा व आत्मा काल की दृष्टि से अनन्त हैं परन्तु व्यापकता की दृष्टि से परमात्मा सर्वत्र व्यापक है परन्तु आत्मा की व्यापकता सीमित है। आत्मा सत् व चित् है तो परमात्मा सत्, चित् तथा आनन्द स्वरूप है। आत्मा सर्वशक्तिमान नहीं है अर्थात् उसे करणीय कार्य करने के लिए दूसरे व्यक्तियों तथा परमात्मा से सहायता लेनी पड़ती है जबकि परमात्मा को अपने कार्य करने के लिए किसी की भी सहायता की आश्वयकता नहीं होती। परमात्मा अनुपम है परन्तु आत्मा अनुपम नहीं है। परमात्मा सृष्टिकर्त्ता है परन्तु आत्मा ऐसा नहीं है।

ईश्वर अभय है तो जीव अधिकतर भयशील ही रहता है। परमात्मा सर्वान्तर्यामी है परन्तु आत्मा अन्तर्यामी हो नहीं सकता। परमात्मा सर्वज्ञ है परन्तु आत्मा अल्पज्ञ है। आत्मा शरीर को प्राप्त करता है परन्तु परमात्मा ने कभी शरीर धारण नहीं किया तथा न ही ऐसा करेगा। परमात्मा अकाम है परन्तु आत्मा ऐसा नहीं हो सकता। कुछ अन्य भी परस्पर भेद हैं।

आरोग्य

•कृष्ण मोहन गोयल, अमरोहा

शीतल जल में डाल कर सौंफ गलाओ आप।
मिश्री के संग पान करो मिटे दाह–संताप।
फटे विमाई या फटे मुंह, त्वचा खुर्दरी होय।
नींबू–मिश्रित आंवला सेवन से सुख होय।
सौंफ इलायची गर्मी में, लौंग सर्दियों में खाये।
त्रिफला सदा बहार है, रोग सदैव हट जाय।।
वात–पित्त जब–जब बढ़े, पहुंचाये अतिकष्ट।
सौंठ–आंवला, दाख संग खाये पीड़ा नष्ट।।
नींबू के छिलके सुखा, बना लीजिये राख।
मिटे वमन मधु संग ले, बढ़े वैद्य की साख।।
लौंग, इलायची, चाबीये रोजाना दस पांच।
हरे श्लेष्मा कण्ठ का, रहो स्वस्थ है सांच।।
स्याह नमक हरडे मिला, खाये जो कोई रोज।
कब्ज गैस क्षण में मिट सीधी है यह खोज।।
पत्ते नागर बेल के हरे चबाये होय।
कण्ठ साफ–सुथरा रहे, रोग भला क्यों होय।।
छल–प्रपंच से दूर हो, जनमंगलकी चाह।
आत्म निरोगी जन वही गहे सत्य की राह।।

भारतीय आस्था का प्रतीक : भगवा

♦डॉ. धर्मवीर सेठी, गुरूग्राम

वर्षा ऋतु में जब कभी भगवान भास्कर की रश्मियाँ उद्भासित होती है तो वे वर्षा के जल–कणों से छनती हुई नीले आकाश पर एक सतरंगी आभा बिखेरती हैं, जिसकी छटा अपने आप में अद्भुत होती है। बच्चे प्रसन्न होकर उसे सतरंगी पींग (seven coloured planquin) कहकर उछलने लगते हैं। ये सात रंग हैं :– लाल (red), भगवा (orange), नीला (blue), गहरा नीला (indigo) और बैंगनी (violet)। वस्तुतः यह (तीर–) कमान के समान होती है जिसे एक वैज्ञानिक ने 'one of the most spectacular light show observed on earth' कहा है। वैज्ञानिक इन सात रंगों को प्रकाश का एकात्म अथवा समूह बताते हैं। आपने अनुभव किया होगा कि कभी–कभी दो रंगों के मेल से तीसरा रंग भी बनाया जाता है। एक विद्वान् के अनुसार थोड़ा पीला, थोड़ा नारंगी और थोड़ा लाल मिलाया जाय तो भगवा रंग बनता है। परन्तु संतरे (orange) के रंग के साथ भगवा अधिक मेल खाता है। इससे सहअस्तित्व का बोध होता है (संतरे की फांकें कैसे एक–दूसरे से जुड़ी रहती हैं), 'संगच्छध्यं' का स्वर निस्सृत होता है। भगवे रंग की यही सीख है।

सूर्य नमस्कार का भारतीय पुरातन संस्कृति में एक विशेष महत्व है। उषा–पान का अभिप्राय है प्रातः कालीन उगते सूर्य की किरणों को नेत्रों के माध्यम से आत्मसात करना। योग की प्रक्रिया में इनका अपना महत्व है। इसी प्रकार सूर्यास्त का चमत्कार भी है। दोनों स्थितियों में जो रंग बिखरता है वह भगवा ही तो है।

गायत्री मंत्र के 'भर्गोदेवस्य धीमहि' में इसी 'भर्गः' अर्थात् परमात्मा की तेजयुक्त शक्ति की आराधना है जिसका प्रतिफल है 'धियो यो नः प्रचोदयात्'–हमारी बुद्धि को उत्कर्ष की ओर ले जाना। इस 'भर्गः' में भगवान का ही गुण है। वैसे ही जैसे आग में स्वर्ण को पिघलाया जाता है तो उसकी अपवित्रता नष्ट हो जाती है और वह अपनी पवित्र अवस्था को प्राप्त होता है–यह 'कुन्दन' बनना ही भगवा कहलाता है।

वेद विश्व ज्ञान का एन्साइक्लोपीडिया (Encyclopedia) है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल की प्रथम ऋचा है :– 'अग्निमीके पुरोहित यज्ञस्य देवं ऋत्विजं। होतारं रत्न धातमम्।' अग्नि अग्रणी भवति', उसका रंग बिल्कुल भगवा है। भगवा वेष–धारी में नेतृत्व की क्षमता है।

ऋषि–मुनि जब एक आश्रम से दूसरे आश्रम में प्रस्थान करते थे तो अग्नि को अपने साथ ले जाने में कठिनाई होती थी तो उसके प्रतीक ध्वज को ही अपने साथ रखने और ले जाने की प्रथा चल पड़ी। भगवे रंग में ओज है, तेज है, पवित्रता है (कुंदन बनाने की) और है शक्ति।

इतिहास साक्षी है कि इस रंग के तिकोने झण्डे को पुरातन काल से ही आर्यो द्वारा अपनाया गया है। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ पर यही भगवा झण्डा था; राम–रावण युद्ध के समय भी इसी भगवे झण्डे पर हनुमान चित्र अंकित रहता था; संन्यासी (जीवन का चतुर्थ आश्रम) की वेशभूषा भी इसी भगवे रंग की होती है; अंधकार को मिटाने वाली बाती की लौ भी भगवे की ओर ही संकेत करती है। शिवाजी, महाराजा प्रताप सरीखे योद्धाओं ने भी अपने ध्वज को भगवा ही रखा। स्वतंत्रता संग्राम में इसी को लेकर तो सेनानियों ने समर जीते। भारत के राष्ट्रीय ध्वज की ऊपर वाली पट्टी भी भगवे रंग की ही है।

भगवा केसरिया से अधिक मेल खाता है और केसर (Saffron) को तो सनातन काल से पवित्र माना जाता है। उसका वैसा ही महत्व है जैसा गंगा जल का, अन्यथा उसे माथे पर तिलक के रूप में क्यों धारण किया जाए और मन्दिरों में भी उससे प्रतिमाओं की क्यों अर्चना की जाए।

बुद्ध, जैन और सिक्ख धर्म के अनुयायियों के लिए भी इस रंग का विशेष महत्व है। सिक्ख धर्मावलम्बी तो इसे अनाचार और अत्याचार के विरुद्ध लड़ने का एक जुझारु रंग मानते हैं। 'पंज पियारे' ऐसी ही वेशभूषा धारण कर शोभायात्रा का नेतृत्व करते हैं। बौद्ध भिक्षु इसी भगवे रंग का चोला पहने रहते हैं और इनके पूजा–स्थलों पर भी इसी रंग के ध्वज फहरते हैं।

वस्तुतः यदि कोई ऐसा एक रंग है जो कि समस्त हिन्दू जाति का प्रतीक बन पाया हो तो वह है 'भगवा'–अग्नि अथवा प्रकाश का रंग जो अपने आप में परमपिता परमात्मा के तेजोमय रूप की ओर संकेत करता है। इसकी धार्मिक महत्ता तो अन्य धर्मों, मतों, सम्प्रदायों के उद्भव से भी पहले की मानी गई हैं।

'भगवा' भगवान (परम शक्ति) की ओर ही संकेत करता है और जब उसे भाग्य विधाता कहकर पुकारा जाता है तब भी इसी तेजोमय रंग की ओर ही इंगित होता है और 'भगवान' के प्रथम तीन अक्षर 'भगवा' ही तो है। वैश्विक दृष्टि से यदि देखा जाए तो चीन ने यदि लाल रंग को अपनाया और इस्लामी देशों ने हरे रंग को तो भारत ने रंगों के पार 'भगवा' रंग से अपनी पहचान बनाई क्योंकि यह रंग त्याग, बलिदान और परम सत्य की खोज से जुड़ा है। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' कहकर इसने सबमें देवत्व की खोज की। इसलिए भगवा प्रतीक बना भारतीय अस्मिता का।

मन्त्र व्याख्या

♦श्री रत्न लाल वैद्य, परामर्शदाता, आर्य वन्दना

ईश्वर स्तुति प्रार्थना, उपासना के सातवें मन्त्र में बहुत ही सुन्दर, सरस और सजीव व्याख्या करते हुये कहा है : हे मनुष्य (सः) वह जगत जननी माता हमारी तारक और उद्धारक है। (बन्धु) वही आदि शक्ति प्रभु हमारे भ्राता के तुल्य हैं। सुखदायक हैं। तथा हमें कदम–कदम पर सहायक होता है। मेघनाथ के बाण से मूर्च्छित हुये लक्ष्मण के आगे विलाप करते हुये मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम कविवर तुलसीदास के शब्दों में कहते हैं : सुत, वित, नारी, भवन, परिवारा, होई जाई जग बारम्बारा, अस विचार जिय जागहुँ ताता, मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता। अर्थात् हे भाई लक्ष्मण इस संसार में सभी वस्तुयें सगे भाई के अतिरिक्त सहज प्राप्त हो जाती हैं। इसका विचार करके अब तुम मूर्छा से जाग उठो,और मेरी स्थिति को पहचानों। मैं तुम्हारे बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकता। यद्यपि श्री राम, लक्ष्मण जी के सगे भाई नहीं थे, फिर भी कविवर तुलसी दास ने उन्हें सहोदर अर्थात् एक ही माँ के पेट से पैदा होने की बात कही है। यह बात झूठ होते हुये भी अपने आप में सत्य से भी अधिक सत्य को छिपाये बैठी है। कोई भाई महलों के सुखों को, पत्नी उर्मिला के प्रेम और माताओं के स्नेह, ममतामयी प्यार को ठोकर मार कर भाई के साथ चौदह साल के लिये जंगल में नहीं जाता। इसी कारण "सहोदर" शब्द का प्रयोग करके भ्रातृ–प्रेम का मार्मिक और मनोहर चित्रण किया है। अतः यजुर्वेद के इस मन्त्र में परम पिता परमात्मा को बन्धु के समान सुखदायक और हितैषी कहा है। (जनिता सः विधाता) वह संसार का उत्पादक् तथा समस्त कार्यों को पूर्ण करने वाला है। उस परम शक्ति के आशीर्वाद का हाथ सदा हमारे ऊपर बना रहे। धामानि वेद "भुवनानि विश्वा" वह प्रभु सभी के नाम, स्थान और कर्मों को जानता है। इसलिये उस परम सत्ता को महर्षि देव दयानन्द ने सर्वज्ञ कहा है। उसी परम सत्ता के सहारे और आसरे की हम सदा कामना करते रहें। उस प्रियतम की प्यारी शीतल छाया में बैठकर हम सब प्रकार से सुखमय और आनन्दयुक्त जीवन यापन करें।

'यत्र देवा अमृतान् आनशाना' (यत्र) अर्थात् उस परम तत्व जगदीश्वर में (देव) विद्वान्, गुणवान् और विचार थे न आप्त पुरूष (अमृतय) मोक्ष रूपी अमृत को (आनशाना) प्राप्त करते हैं। उस परमेश्वर में सांसारिक दुःख, कलेश और वासनाओं का सम्पर्क नहीं है। (तृतीय) तीसरे स्थान (धामम) परमं पिता परमेश्वर में (अध्यैरंमन्त) ध्यान लगाते हुये, इच्छानुसार उस परमानन्द में विचरण करके सर्व सुखों और आनन्द का उपभोग करते हैं। उस परम सत्ता की अनुभूति करके उससे प्राप्त भक्ति रस के अमृत का पान करके जीवन को धन्य करते हैं।

"एक अद्भुत घटना"

♦माया राम वर्मा, प्रबन्ध सम्पादक

वेदों में बार–बार आया देवस्य पश्य काव्यम् अर्थात हमें इस परम सत्य के ब्रह्मांड रूपी कार्य को सदा निहारते रहना चाहिए। इस विश्व में असंख्य आते है और असंख्य प्राणी ही विदा हो जाते है। आना जाना प्रकृति के नियमानुसार अनादि काल से चला हुआ है। कोई शमशान भूमि में दाह–संस्कार हेतू ले जाया जाता है और कई शहनाईयाँ बजती दूल्हा व दुल्हन विश्व की सम्पूर्ण खुशियों को अपने भीतर समेटे परिवार सहित आनन्द में डूबे रहते हैं। कई बार जो असम्भव घटना भी सम्भव हो जाती है। तो दिल व दिमाग में एक अद्भुत प्रसन्नता का सागर हिलोरे लेने लगता है। अभी कुछ दिन पहले आज तक पर यह समाचार प्रकाशित हुआ। कि धर्मवीर नामक सैनिक बारह साल के उपरान्त अपने घर वापिस आ गया। वह एक सड़क दुर्घटना में अपने समस्त स्मृतियों को भूल चुका था और यहाँ वहाँ मांगकर भूख–प्यास को शांत करता था। आज तक समाचार के अनुसार धर्मवीर सड़क पर चल रहा था। उधर पीछे से आ रहे मोटर साईकिल से टकरा गया। इससे उसे सारी पिछली स्मृति पुनः याद आ गई। उस दोपहिए वाहन वाले ने हाथ जोड़कर उसका नाम ग्राम पूछा और उसे अपना इलाज कराने हेतू ५०० रु.किराया देकर भेज दिया। वह रात्रि के निकट अंधकार में अपने घर पहुंचा और जोर से दरवाजा हिलाया भीतर से ७० वर्षीय एक वृद्ध बोला कौन हो ? उस आवाज को पहचानते हुए बाहर से आवाज आई। पिता जी मैं धर्मवीर हूँ। अब जिस सैनिक को मरा हुआ समझा जा चुका था और तीन वर्ष बाद सरकार द्वारा उसकी पत्नी को भी पैंशन लग गई थी उसे वापस घर अब जाने की बात पिता और उसकी माँ को बहुत विचित्र लगी। उसकी पत्नी अपने दो बेटियों सहित कमरे में सोई हुई थी। दौड़कर बाहर निकली। दरवाजा खोलकर साक्षात अपने पति को आया देख उसके गले लिपट गई धर्मवीर ने अपने वृद्ध माता–पिता के चरण स्पर्श किया और बेटियों के सिर पर हाथ रखा परिवार के समस्त लोग आनन्द सागर में गोते लगाने लगे। ग्रामवासियों को इस सुखद समाचार सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उजड़े हुए घर में फिर हरियाली छा गई यह बात अत्यन्त अनहोनी थी लेकिन प्रभु इच्छा से परिवार के समस्त लोगों इस सुख का आनन्द लिया। हमें हर समय प्रभु की इच्छा व शिक्षा का पालन करते रहना चाहिए वह निराकार शक्ति कभी न कभी हमें हरपल आनन्द अनुभूति करवाती रहती है। इसलिए हमें देवस्य पश्य काव्यम् की बात को दिल और दिमाग से स्वीकार करते रहना चाहिए। वह विश्व विधाता हमारे अंग संग रहता है फिर हमें हर परिस्थिति में उसके हाथ और साथ को नहीं छोड़ना चाहिए। उसकी चरण शरण में बैठकर आनन्द अनुभूति करते रहना चाहिए।

आर्य समाज मन्दिर सुन्दरनगर कालौनी में

वार्षिक उत्सव एवं वेद प्रचार आयोजन

दिनांक 28 जुलाई 2016 से 31 जुलाई 2016 तक

न कि देवा इनीमसि नक्या योपयामसि मन्त्र श्रुत्यञ्चरामसि (साम. १.७६)
न तो हम किसी की हिंसा करते हैं, न ही घात–पात करते हैं और न ही फूट डालते हैं
वरन् हम तो मन्त्र को सुनकर तदनुसार श्रेष्ठ आचरण करते हैं।"

मान्यवर!

आपको सूचित करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है कि आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी (हि.प्र) में वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में वेद–प्रचार का आयोजन दिनांक 28 जुलाई 2016 से 31 जुलाई 2016 तक बड़ी श्रद्धा एवं धूमधाम से किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी आर्यवेश जी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रति सभा दिल्ली एवं सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री राम निवास जी की भजन मण्डली (हरियाणा) से पधार रहे हैं। सत्य धर्म क्या है, सच्चे ईश्वर की उपासना कैसे हो, हम किस प्रकार सुख एवं शान्ति प्राप्त करें आदि विषयों पर इन विद्वानों के सारगर्भित व्याख्यान सुनने को मिलेंगे। अतः आप से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में आर्य समाज में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्मः" (यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है) अतः इस अवसर पर विश्वशान्ति के निमित्त विशेष यज्ञ किया जायेगा। इसमें चतुर्वेद शतक के मन्त्रों से आहुतियां दी जायेंगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री रामफल सिंह आर्य (महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा (हि.प्र.) एवं प्रधान आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी) होंगे। अतः अधिक से अधिक संख्या में यजमान बनकर पुण्य लाभ करें। यजमान बनने वाले सज्जन अपना नाम मन्त्री आर्य समाज कालौनी को देने का कष्ट करें।

कार्यक्रम

वीरवार, 28 जुलाई से शनिवार 30 जुलाई 2016 तक

यज्ञः	---	प्रातः 6.30 से 7.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचनः	---	प्रातः 7.30 से 8.30 बजे तक
		रात्रि 8.00 से 10.00 बजे तक (प्रतिदिन)

रविवार, 31 जुलाई 2016

यज्ञ एवं पूर्णाहुति	---	प्रातः 8.00 से 10.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचनः	---	प्रातः 10.00 से 12.30 बजे तक

निवेदक : प्रधान / मन्त्री एवं समस्त कार्यकारिणी, आर्य समाज, सुन्दरनगर, कालौनी

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31.12-2018

सेवा में

बुक पोस्ट

प्रति,

आर्य समाज खरीहड़ी की वयोवृद्ध महिला श्रीमति चन्द्रमू देवी पत्नी स्वं. श्री अजुध्या प्रशाद।

स्व. श्री नानक चन्द सैनी की पावन स्मृति में उनकी सुपुत्री द्वारा रूपये १०००/- की सहयोग राशि आर्य वन्दना को प्रदान की गई।

६८ वषीय श्रीमति चन्द्रमू देवी को माल्यार्पण करती हुई आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रोशन लाल बहल की मामी श्रीमति सरस्वती देवी, उन के साथ खड़ी हैं श्रीमति महेन्द्री देवी, रमा शर्मा और अर्चना शर्मा।

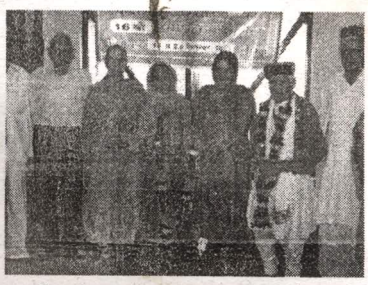

आर्य समाज सुन्दरनगर के संस्थापक सदस्य श्री भ्राता केवल राम आयुर्वेदाचार्य और श्रीमति चन्द्रमू देवी के साथ खड़े आर्यजन।

आर्य समाज सुन्दरनगर के संस्थापक सदस्य ८८ वर्षीय श्री भ्राता केवल राम आयुर्वेदाचार्य को माल्यापर्ण करते हुए तथा टोपी पहनाते हुए दयानन्द मठ घंडरां के संचालक स्वामी सन्तोषानन्द तथा कार्यकारी अध्यक्ष श्री रोशन लाल बहल।

बल्ह खण्ड मासिक बैठक में भाग लेते पदाधिकारी

साभार

स्वामी संतोषानन्द, संचालक दयानन्द मठ घण्डरा, तह. इंदौरा, जिला कांगड़ा ने ₹ ११००, आर्य समाज नुरपूर, जिला कांगड़ा ने ₹ ११००, स्व. श्री नानक चन्द जी की स्मृति में उनके सुपुत्री की ओर से निवासी कुम्मी, तह. बल्ह, जिला मण्डी द्वारा ₹ १०००, श्री लाल चन्द कौड़ा, प्रिंसीपल आर्य हाई स्कूल भुन्तर, जिला कुल्लू ने ₹ ५००, श्री मनसा राम चौहान, आर्य समाज कुल्लू, जिला कुल्लू ने ₹ २०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता है।